आपने लिखा

मुझे हमेशा ही 'संदर्भ' के नए अंक का इन्तज़ार रहता है। वास्तव में, विद्यार्थियों और शिक्षकों, दोनों के लिए यह पत्रिका उत्कृष्ट है। पिछले अंकों में प्रकाशित सामग्री कक्षा में पढ़ाने के साथ-साथ मेरे स्वयं के लिए भी काफी लाभप्रद रही। पत्रिका के प्रकाशन के लिए एकलव्य को और हम तक पहुँचाने के लिए अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन को धन्यवाद।

दशरत सिंह भाटी
शिक्षक, शासकीय उच्च प्राथमिक शाला
सिरोही, राजस्थान

इत्तेफाक से मुझे एकलव्य की वेबसाइट देखने और 'संदर्भ' पत्रिका के कुछ अंकों को पढ़ने का मौका मिला। कुछ लेख बहुत ही पसन्द आए। इन महत्वपूर्ण कामों में प्रयासरत रहने के लिए आपको बधाई।

नेहा गोयल गुप्ता
बैंगलोर, कर्नाटका

पत्र डालने में देरी के लिए खेद व्यक्त करता हूँ। 'संदर्भ' पत्रिका के अंक 79 में प्रकाशित लेख 'जब बच्चे गाली दें तो' के लेखक के विचारों से मैं काफी हद तक सहमत हूँ। बाल मनोविज्ञान की दृष्टि से चिन्तन करें तो लगता है कि यदि किसी बच्चे का सामाजिक आचरण खराब हो तो उसको उस भावना को भरपूर जी लेने देना चाहिए। हमारा प्रयास सुधारों की तरफ जाना चाहिए। बच्चा जब तक उस भावना के गलत पक्ष को पहचानेगा नहीं तब तक सारे प्रयास निरर्थक हैं। जिस समय बच्चा उस भावना को भरपूर जी रहा है, यदि उसे उचित समय पर उचित मार्गदर्शन नहीं मिलता है तो वह दिशा से भटक सकता है। मुझे लगता है, लेखक ने ठीक ही कहा है क्योंकि बच्चे को यदि दूसरे तरीकों से समझाया जाता तो वह शायद नहीं समझ पाता। अक्सर हम देखते हैं कि यदि बच्चे की किसी भावना को दबाया जाता है तो वह भावना दबने पर कुछ समय के लिए अचेतन मन में चली जाती है लेकिन मरती नहीं और अनुकूल परिस्थिति पाकर पुनः विकराल रूप में प्रकट होती है जो बच्चे के लिए तो नुकसानदायक होती ही है, समाज के लिए भी खतरनाक है। बच्चे की भावनाओं का आदर कर उसमें सहयोग देना चाहिए लेकिन यदि वह भावना बच्चे को दिशाहीन करने वाली है तो हमें उसके गलत पक्ष को बड़े ही मनोवैज्ञानिक तरीके से उदघाटित करने में देर नहीं करनी चाहिए। यह लेख बहुत ही अच्छा व जीवन दृष्टिदायक तथा बाल मनोविज्ञान से भरा हुआ है जिसे हम शिक्षकों को अपने व्यावहारिक अर्थों में अपनाना चाहिए।

यह पत्रिका मुझे बाल मनोविज्ञान विषय को समझने में काफी सहायता प्रदान कर रही है जिससे मेरा शोध सार्थक दिशा की तरफ बढ़ा। शिक्षा जगत के लिए इससे बेहतर पत्रिका नहीं हो सकती। इसे अध्यापन क्षेत्र से जुड़े हुए विद्वानों को ज़रूर पढ़ना चाहिए। आपको इस पत्रिका के माध्यम से बहुत ही अच्छे ज्ञान का प्रसार करने के लिए हृदय से लाख-लाख बधाइयाँ।

लीलाराम मांडिया
शोधार्थी, केन्द्रीय विश्वविद्यालय
हरियाणा

संदर्भ का अंक 83 मिला। हर बार की तरह इस बार भी इसे पूरा पढ़ा। सर्वप्रथम दिशा नवानी और कमलेश जोशी को मैं बधाई देना चाहता हूँ। उन्होंने टीएलएम

शिक्षण सामग्री पर जो आलेख दिया है वो निश्चित रूप से शिक्षक प्रशिक्षण ले रहे छात्रों को मार्गदर्शन देगा। उनके लेखन ने छात्राध्यापकों की टीएलएम सम्बन्धी बहुत सारी समस्याओं का समाधान किया। इस लेख की फोटो कॉपी सभी छात्राध्यापकों को दी गई ताकि अपने पाठ अभ्यास में इसका उपयोग कैसे किया जाए, इसकी जानकारी उन्हें प्राप्त हो सके। कृपया आगामी अंकों में भी शिक्षण-प्रशिक्षण सम्बन्धी लेखों को शामिल करें।

अंक 82 में किशोर पवार के लेख 'नाम पेल ग्रास ब्लू...' ने रोचक जानकारी दी। आशा है उनके लेख आगे और अच्छी जानकारी देंगे। मेरा आपसे निवेदन है कि आप लेखकों के नाम और परिचय के साथ उनका ई-मेल आईडी ज़रूर दें ताकि हम शिक्षण सम्बन्धी आलेखों का आदान-प्रदान कर सकें। आगे की पत्रिका में हो सके तो सुअर की पाचन क्रिया की विस्तृत जानकारी देने की कृपा करें।

विनोद कुमार सुथार, वरिष्ठ व्याख्याता
जवाहर विद्यापीठ शि.प्र. महाविद्यालय,
कानोड, उदयपुर, राजस्थान

संदर्भ का अंक 83 पढ़ने को मिला, तो प्रतिक्रिया देने के लिए कलम भी उठ गई। कुछ शब्दों ने तारीफ को पकड़ा तो कुछ ने शिकायत को। 'ऑक्सीजनः एक तत्व एक अवधारणा' लेख अत्यन्त रुचिकर व ज्ञानवर्धक लगा। अक्सर हम पढ़ाते समय इस तथ्य पर ही ज़ोर देते हैं कि वायु में कितनी ऑक्सीजन है और इस आधार पर नाइट्रोजन को ज़्यादा बता देते हैं। पर अब नए सिरे से सोचना पड़ेगा।

'पदार्थ की प्रकृति के बारे में बच्चों के भ्रम' में तो ऐसा लगा मानो सारी बातें हमको ही ध्यान में रखकर कही गई हैं। विज्ञान शिक्षण में यह एक बड़ी कमी को रेखांकित करने वाला लेख रहा, पर हमारी अपेक्षा इससे भी आगे की थी। हमें बच्चों में प्रचलित भ्रम तो शायद पता थे, पर ये भ्रम क्यों हैं, इस बारे में बहुत ही कम जानकारी थी। इन भ्रमों को दूर करने के लिए कुछ विशेष समाधान नहीं मिले। क्या उमा सुधीर समाधान के लिए सुझाव या कुछ गतिविधियों को आगे देंगी? ऐसी अपेक्षा तो उनसे है।

'कक्कू के कारनामे' मज़ेदार थे, पर चीते की रफ्तार पर जानकारी कुछ छूटी-छूटी-सी लगी। नाज़िया और अंजुम के गणित शिक्षण के अनुभव नवोदित शिक्षकों के लिए नवाचार जैसे ही थे जो बेहतर शिक्षक बनने की नींव साबित हो रहे हैं। कुल मिलाकर यह अंक हमेशा की तरह बहुत कुछ नया दे गया। धन्यवाद पूरी 'संदर्भ' टीम को।

राजीव बिलैया
टी.जी.टी., रेलवे स्कूल,
भिलाई (छत्तीसगढ़)

शैक्षणिक संदर्भ के विगत वर्षों में प्रकाशित लेखों को पढ़ने के लिए एकलव्य की वेबसाइट **www.eklavya.in** विज़िट कीजिए।